

**मूर्ति पूजन** पुं. (तत्.) मूर्तियों की पूजा करने की क्रिया अथवा भाव।

**मूर्तिपूजा** स्त्री. (तत्.) 1. सगुण भक्ति के अंतर्गत मूर्ति में ईश्वर, देवता अथवा अपने आराध्य की भावना करके की जाने वाली पूजा 2. मूर्तियों की पूजा करने की पद्धति, प्रथा अथवा विधान।

**मूर्तिभंजक** वि. (तत्.) मूर्ति अथवा प्रतिमा को तोड़ने वाला इति. मूर्ति उपासना का घोर विरोधी; मूर्ति उपासना में विश्वास न रखने वाले धर्म के मतानुयायियों द्वारा पर धर्मावलंबियों की देव प्रतिमाओं को तोड़ने वाला लाक्ष. रुढिगत आस्थाओं, विश्वासों और रीतियों का घोर विरोधी।

**मूर्तिमान** वि. (तत्.) 1. जो मूर्त रूप में विद्यमान हो 2. सगुण तथा साकार 3. प्रत्यक्ष।

**मूर्तिलेख** पुं. (तत्.) किसी मूर्ति के नीचे उसके परिचय के रूप में अंकित विवरण।

**मूर्तिविद्या** स्त्री. (तत्.) मूर्ति या प्रतिमा बनाने की कला, मूर्ति बनाने का कौशल।

**मूर्द्ध** पुं. (तत्.) सिर।

**मूर्द्धक** पुं. (तत्.) क्षत्रिय वि. सिर से संबंध रखने वाला।

**मूर्द्ध कणी** स्त्री. (तत्.) ऐसा कोई उपकरण जो धूप, पानी आदि से बचने के लिए सिर के ऊपर लगाया जाता हो, छतरी।

**मूर्द्धकपारी** स्त्री. (तद्.) दे. मूर्द्ध कर्णी।

**मूर्द्ध खोल** पुं. (तद्.) दे. मूर्द्धकर्णी।

**मूर्द्धज** वि. (तत्.) मूर्द्धा अर्थात् सिर से उत्पन्न होने वाला या तत्संबंधी पुं. केश, बाल।

**मूर्द्धज्योति** स्त्री. (तत्.) ब्रह्मरंध्र।

**मूर्द्धन्य** वि. (तत्.) 1. मूर्द्धा से संबंध रखने वाला, मूर्द्धा-संबंधी 2. मस्तक या सिर में रहने वाला 3. (वर्ण) जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

**मूर्द्धन्य वर्ण** पुं. (तत्.) देवनागरी वर्णमाला के वे वर्ण व्यंजन जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है जैसे- ट, ठ, ड, ढ, ण तथा ष।

**मूर्द्ध पिंड** पुं. (तत्.) हाथी का मस्तक।

**मूर्द्ध-पुष्प** पुं. (तत्.) शिरीष पुष्प।

**मूर्द्ध-रस** पुं. (तत्.) भात का फेन।

**मूर्द्धा** पुं. (तत्.) मस्तक, सिर व्या. मुँह के अंदर का तालु और अलिजिह्वा के बीच का अंश जिसे जीभ का अग्र भाग ट, ठ, ड, ढ, ण आदि का उच्चारण करते समय उलटकर छूता है।

**मूर्द्धाभिषिक्त** वि. (तत्.) 1. जिसमें मूर्द्धा (सिर) पर (मंत्रोच्चार के साथ) जल डाल कर स्नान करवाया गया हो 2. जिसको विधि-विधान के साथ सिंहासन पर बैठाया गया हो।

**मूर्द्धाभिषेक** पुं. (तत्.) प्राचीन भारत का एक अत्यंत धार्मिक एवं राजकीय कृत्य जिसमें नये राजा के सिंहासन पर आरूढ़ होने से पूर्व उसके मूर्द्धा (सिर) पर पवित्र नदियों का अभिमंत्रित जल छिड़का जाता था।

**मूर्धन्य** पुं. (तत्.) सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ जैसे- मूर्धन्य साहित्यकार भाषा. (उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजनों का एकवर्ग) जिसमें जिह्वानोक (करण) पलट कर कठोर तालु के मध्य भाग (उच्चारण स्थान) को छूती है संस्कृत तथा हिंदी में 'ट' वर्ग तथा 'ष' मूर्धन्य व्यंजन है।

**मूर्वा** स्त्री. (तत्.) एक प्रकार की लता जिसके रेशों से धनुष की डोरी या क्षत्रियों की (कटिसूत्र) तगड़ी तैयार की जाती है, मधुरसा।

**मूर्विका** स्त्री. (तत्.) दे. मूर्वा।

**मूर्वी** स्त्री. (तत्.) दे. मूर्वा।

**मूल** पुं. (तत्.) 1. वृक्षों आदि का जमीन के अंदर रहने वाला वह भाग जिनसे उनका पोषण होता है, जड़ 2. जमीन के अंदर से प्राप्त होने वाली जड़ जैसे- 'सहि दुःख कंद मूल फल खाई'-मानस. 3. असल जमा या धन जिसे लाभ कमाने के लिए व्यापार आदि में लगाया जाए